राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित आलू, प्याज, लहसुन, फल, सब्जी कृषि, कोल्ड स्टोरेज, डेयरी एंव ख

संस्थापित वर्ष 1992

R.N.I No.

हिन्दी साप्ताहिक

आलू सन्देश

e-mail
aloosandesh@gmail.com

कानपुर, गुरुवार, 30 मई 2024

W : 094154
Mob:9415405464,
7398365

2026

कार्यालय : 86/231-ए, देवनगर (रायपुरवा) कानपुर-208003

प्रचंड गर्मी से ज्वार, बाजरा एवं चरी के चारे में मौजूद विष से पशुओं को बचाएं

कानपुर, 29 मई (निस)। सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम दल में आज कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने बताया कि गर्मी के मौसम में पशुओं के लिए हरा चारा नितांत आवश्यक है। इस तपती गर्मी में इस समय हरे चारे के रूप में ज्वार एवं बाजरे की फसल मौजूद है जिसमें हाइड्रोसयनिक नामक अम्ल होता है जो पशु को नुकसान करता है इस अम्ल का निर्माण हरे चारे में मौजूद साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड के कारण होता है, इन ग्लूकोसाइड पर चारे अथवा रूमेन में मौजूद एंजाइम की क्रिया से हाइड्रोसायानिक अमल बनता है जो जहर होता है। साइनाइड विषाक्त में ऑक्सीजन के वाहक एंजाइम प्रभावित होने के कारण शरीर के ऊतकों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है जिससे दम घुटने से पशु की मृत्यु हो जाती हैद्य ऐसे कई पौधे/ चारे हैं जिनके सेवन से साइनाइड विषाक्त हो सकती है, किंतु इसमें साइनाइड की मात्रा 500 पी पी एम हरे चारे में एवं 200 पी पी एम सूखे चेहरे में सुरक्षित रहता है, परंतु यह मात्रा जब हरे चारे में 600 पी पी एम से

ज्यादा हो जाता है तो पशु के लिए खतरनाक साबित होता है। साइनाइड की मात्रा विभिन्न मौसमों में एवं पौधों के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न होती हैद्य मुख्यत:ज्वार, बाजरा चारी आदि चारों में कभी-कभी कुछ विशेष परिस्थितियों में साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड की अधिक मात्रा होने के कारण इनके सेवन में पशुओं की मृत्यु हो जाती है। डॉ शशिकांत ने बताया कि चारे में विष की मात्रा उसकी अवस्था, मृदा में नाइट्रोजन की उपस्थिति, किसान द्वारा बुवाई के समय चारे की वृद्धि के लिए दी गई यूरिया या अन्य खाद एवं पानी की कमी आदि कारकों पर निर्भर करती । विशेष रूप से पानी की कमी के कारण जिन पौधों की वृद्धि रुक गई हो, पत्तियां सूख कर मुरझा गई हो वह पीली पड़ गई हो, ऐसे चारे में साइनाइड की मात्रा बढ़ जाती हैद्य डॉक्टर कांत ने कहा हरे चारे के अभाव में भूखे पशु यह चारा देखते ही लालच बस इसे खा लेते हैं जानकारी के अभाव में पशुपालक भी मुरझाई हुई एवं अविकसित ज्वार, बाजरा एवं चरी को हरे चारे के अभाव में देने लगते हैं , इसके कारण पशु की मृत्यु हो जाती है।

लक्षण- साइनाइड युक्त चारे के अचानक अधिक सेवन के 10 से 15 मिनट बाद ही पशु में विषाक्त के कारण प्रकट होने लगते हैं जिसमें - 1-पशु बेचैन होने लगता है। 2-उसके मुंह से लार गिरने लगती हैद्य 3- सांस लेने में कठिनाई होने लगती है तथा पशु मुंह खोलकर सांस लेता है।4- मांसपेशियों में ऐंठन व दर्द होने लगता है,अत्यंत कमजोरी की वजह से पशु लड़खड़ाकर जमीन पर गिर जाता है। 5- पशु अपने सर को पेट की ओर घूमांकर रखता है।6- मुंह से कड़वे बादाम जैसी गंध आती है ।7- रक्त का रंग चमकीली लाल हो जाता है।8- मृत्यु के समय दम घुटने जैसी कराह एवं पीड़ा होती है ।

उपचार- 1- साइनाइड विषाक्तता के लक्षण प्रकट होते ही पशु को सोडियम नाइट्राइट 3 ग्राम एवं सोडियम थायोसल्फेट 15 ग्राम 200 मिलीलीटर पानी में घोलकर नसों द्वारा चिकित्सा से परामर्श के बाद देना चाहिए। 2-सोडियम थायोसल्फेट 30 से 60 ग्राम मुंह से देना चाहिए। 3- साइनाइड ग्रस्त पशु को ज्यादा पानी पिलाना चाहिए। 3- चरागाहों में चरने के लिए ले गए पशुओं को कम बढ़ी हुई ज्वार व चरी की फसल नहीं खाने दें। 4- अच्छी सिंचाई की गई ज्वार वह चारी ही पशुओं को हरे चारे के रूप में दें दो से चार बार बारिश होने के बाद बड़ी फसल ही पशुओं को खिलाएं।5- साइनाइड ग्रस्त चारे को हे के रूप में संरक्षित कर सकते हैं ।6- साइनाइड ग्रस्त चारे को कुछ समय तक सुखाने के बाद उसमें शीरा मिलकर साइलेज के रूप में खिलाने से भी विष का प्रभाव कम हो जाता है। 7- छोटे मुरझाए हुए पीले वह सुख कर ऐंठे हुए पौधे को चारे के रूप में उपयोग नहीं करें।

STD. 011 Ph.: 27673524(O), 42271773, 27234808 (Resi)
Mob. 09810214579 (A.K.) 09811505007,(H.K.)
CH.DEVI SINGH ASHOK KUMAR
CH.ASKOK KUMAR HARISH KUMAR
CH. DEVI SINGH BHONDUMAL ♣ M/S BEST AALOO COMPANY
PotatoMerchants & Commission Agent
A-294 New Subzi Mandi, AZADPUR, DELHI-110033

Ph:. 011-27408750(Phar),27234873(Off)27679035(Resi)
09310067778(Kapil),09313867778(Virendra)
VIRANDRA ALU COMPANY
A-278 Potato,Onion Commission Agent & Order Suppliers
LicNo.B-3341
New Subzi Mandi,AZADPUR, DELHI-110033

राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित आलू, प्याज, लहसुन, फल, सब्जी कृषि, कोल्ड स्टोरेज, डेयरी एंव खा

संस्थापित वर्ष 1992

R.N.I No.

हिन्दी साप्ताहिक

आलू सन्देश

e-mail
aloosandesh@gmail.com

कानपुर, गुरुवार, 30 मई 2024

W : 094154
Mob:9415405464,
7398365

2026

कार्यालय : 86/231-ए, देवनगर (रायपुरवा) कानपुर-208003

गर्मी की गहरी जुताई हेतु किसानों को दिया गया प्रशिक्षण

कानपुर, 28 मई (निस)। सीएसए के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगपुर गहदेवा में कृषकों को गर्मी की गहरी जुताई विषय पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डा.खलील खान ने बताया कि ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अपने खाली खेतों में अवश्य करें।

डॉक्टर खान ने बताया कि आगामी फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए रबी फसल की कटाई के तुरंत बाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु में खेत को खाली रखना लाभप्रद होता है। उन्होंने कहा कि जहां तक संभव हो सके किसान भाई मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई कर दें। खाली खेत में गहरी जुताई मई माह में अवश्य कर लें। इस गहरी जुताई से जो ढेला बनते हैं वे धीरे-धीरे हवा व बरसात के पानी से टूटते रहते हैं। साथ ही जुताई से मिट्टी की सतह पर पड़ी फसल अवशेष की पत्तियां पौधों की जड़ें एवं खेत में उगे हुए खरपतवार आदि नीचे तक जाते हैं। जो सड़ने के बाद खेत की मिट्टी में कार्बनिक खादों/ जीवांश पदार्थ की मात्रा में बढ़ोतरी करते हैं इससे भूमि में वायु संचार एवं जल धारण क्षमता बढ़ जाती है। गहरी जुताई से गर्मी में तेज धूप के कारण कीड़े मकोड़े एवं बीमारियों के जीवाणु खत्म हो जाते हैं।

मृदा वैज्ञानिक ने बताया कि ग्रीष्मकालीन जुताई से जलवायु का प्रभाव सुचारु रुप से मिट्टी में होने वाली प्रक्रियाओं पर पड़ता है और वायु तथा सूर्य के प्रकाश की सहायता से मिट्टी में विद्यमान खनिज अधिक सुगमता से पौधे भोजन के रूप में ले लेते हैं। इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी डा.अजय कुमार सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को गर्मी की जुताई दो-तीन वर्ष में एक बार अवश्य कर देनी चाहिए । डॉक्टर सिंह ने बताया कि अनुसधान के परिणामों में यह पाया गया है कि गर्मी की जुताई से भूमि कटाव में 66.5 प्रतिशत तक की कमी आई है। पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत पशुओं में होने वाली बीमारियों एवं उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी।गृह वैज्ञानिक डा निमिषा अवस्थी ने लघु उद्योग के बारे में जानकारी दी। जबकि गौरव शुक्ला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम सफल बनाने में विशेष सहयोग प्रदान किया किसान उपस्थित रहे। इस अवसर पर 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

गर्मी में सब्जी फ़सल की देखभाल एवं बचाव के उपाय

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डा.आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के अधीन संचालित बंजारा स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर संजय कुमार ने गर्मी की मौसम में सब्जी फसलों के बचाव हेतु एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि प्रदेश की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में सब्जी उत्पादन का विशेष महत्व है क्योंकि सब्जियों की खेती प्रति इकाई क्षेत्रफल में अधिक उत्पादन एवं आय के साथ-साथ रोजगार सृजन करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका है। परंतु इस माह में भीषण गर्मी के चलते किसान भाइयों को सब्जियों की खेती में क्षति हो सकती है जैसे-

1. **सनबर्न नैक्रोसिस**(फल के धूप वाले हिस्से पर छिलका के ऊतक का मर जाना व कोशिका झिल्ली का विच्छेदन हो जाना)- यह दशा उच्च तापमान साफ आसमान व उच्च प्रकाश वितरण वाले दिनों में अधिक होती है इससे तरबूज, खरबूज, टमाटर, बैंगन, मिर्च, खीरा, तरोई, कद्दू व शिमला मिर्च की फसलें प्रभावित हो सकती हैं।

2. **सन बर्न ब्राउनिंग**- इसमें ऊतक का मृत्यु का कारण नहीं होता। परिणाम स्वरुप फल के धूप वाले हिस्से पर पीले कांच या भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं परन्तु कोशिकाएं जीवित रहती हैं। लेकिन क्लोरोफिल कैरोटीन जंतु फूल जैसे वर्णन नष्ट हो जाते हैं। यह दशा ज्यादातर तरबूज या खरबूजा की फसल में देखने को मिलती है

3. **फोटो ऑक्सीडेटिव सनबर्न**- जब छायादार फल अचानक सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आ जाते हैं तो इस प्रकार के सनबर्न में अतिरिक्त प्रकाश से फल से फोटो ब्लीच हो जाएंगे क्योंकि फल उच्च प्रकाश स्तरों के अनुकूल नहीं होते। यह दशा कभी-कभी ग्रीन हाउस में उत्पादित सब्जियों में देखने को मिलती है।

4. उपरोक्त के अतिरिक्त सब्जियों में फलों का पीला पड़ना , फलों का मर जाना , फलों की वृद्धि का रुक जाना, फल सड़न , पौध गलन , समय से फलों का पके जैसा लगना , फल फटना, पुष्पों का न विकसित होना, फलों की वृद्धि रुक जाना इत्यादि लक्षण उच्च तापमान व हीट वेब के कारण सब्जियों पर हो सकते हैं।

देखभाल एवं बचाव-

1. नमी को बनाए रखने के लिए सब्जियों के फ़सल में शाम को हल्की सिंचाई करें ।
2. फलों को पत्तों से ढककर रखें।
3. सबसे ज्यादा नुकसान टमाटर की फसल को हो सकता है जिसके बचाव हेतु टमाटर की पौध को स्टेकिंग या सहारा दें जिससे फल का संपर्क जमीन से न रहे व सूर्य की विकिरण को कम करने के लिए अस्थाई छप्पर या जाली का उपयोग करें।
4. कद्दू वर्गीय सब्जियों में सुबह के समय 5 से 7 बजे के बीच कोई दवा का छिड़काव न करें यदि दवा का छिड़काव करना है तो शाम को करें।
5. फल सडन, पौध सडन व जड़ गलन आदि के बचाव के लिए 2 ग्राम कापर ऑक्सिक्लोराइड प्रति लीटर पानी में मिलाकर शाम को छिड़काव करें।
6. जल में घुलनशील पोषक तत्वों का सिंचाई के पानी के साथ शाम के समय उपयोग करें।

दैनिक
आज का कानपुर
काशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, मौदहा, बादा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित

गर्मी में सब्जी फसल की ठीक से देखभाल नहीं हुई तो किसानों को होगी क्षति

कानपुर। प्रदेश की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में सब्जी उत्पादन का विशेष महत्व है।सब्जियों की खेती प्रति इकाई क्षेत्रफल में अधिक उत्पादन एवं आय के साथ-साथ रोजगार सृजन करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका है। भीषण गर्मी के चलते यदि सही तरह से देखभाल न की गई तो किसान भाइयों को नुकसान हो सकती है। यह जानकारी रविवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कृषि विज्ञान केंद्र के उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर संजय कुमार ने दी।

उन्होंने बताया कि भीषण गर्मी की वजह से सब्जी फसल में विभिन्न प्रकार के लक्षण दिखाई देते हैं। पहला सनबर्न नैक्रोसिस(फल के धूप वाले हिस्से पर छिलका के ऊतक का मर जाना व कोशिका झिल्ली का विच्छेदन हो जाना) यह दशा उच्च तापमान, साफ आसमान व उच्च प्रकाश वितरण वाले दिनों में अधिक होती है। इससे तरबूज, खरबूज, टमाटर, बैगन, मिर्च, खीरा, तरोई, कद्दू व शिमला मिर्च की फसलें प्रभावित हो सकती हैं।

सन बर्न ब्राउनिंग- इसमें ऊतक का मृत्यु का कारण नहीं होता। परिणाम स्वरूप फल के धूप वाले हिस्से पर पीले कांच या भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं। परन्तु कोशिकाएं जीवित रहती हैं। क्लोरोफिल कैरोटीन जंतु फूल जैसे वर्णन नष्ट हो जाते हैं। यह दशा ज्यादातर तरबूज या खरबूजा की फसल में देखने को मिलती है।

फोटो ऑक्सीडेटिव सनबर्न- जब छायादार फल अचानक सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आ जाते हैं तो इस प्रकार के सनबर्न में अतिरिक्त प्रकाश से फल से फोटो ब्लीच हो जाएंगे क्योंकि फल उच्च प्रकाश स्तरों के अनुकूल नहीं होते। यह दशा कभी-कभी ग्रीन हाउस में उत्पादित सब्जियों में देखने को मिलती है।

डॉ. संजय ने बताया कि उपरोक्त के अतिरिक्त सब्जियों में फलों का पीला पड़ना, फलों का मर

जाना, फलों की वृद्धि का रुक जाना, फल सड़न, पौध गलन, समय से फलों का पके जैसा लगना, फल फटना, पुष्पों का न विकसित होना, फलों की वृद्धि रुक जाना इत्यादि लक्षण उच्च तापमान व हीट वेव के कारण सब्जियों पर हो सकते हैं।

कृषि उद्यान वैज्ञानिक संजय कुमार ने बताया कि किसान भाइयों को नमी को बनाए रखने के लिए सब्जियों के फसल में शाम को हल्की सिंचाई करनी चाहिए। फलों को पत्तों से ढक कर रखें। सबसे ज्यादा नुकसान टमाटर की फसल को हो सकता है। इसके बचाव हेतु टमाटर की पौध को स्टेकिंग का सहारा लें जिससे फल का संपर्क जमीन से न रहे व सूर्य की विकिरण को कम करने के लिए अस्थाई छप्पर या जाली का उपयोग करें। कद्दू वर्गीय सब्जियों में सुबह के समय 5 से 7 बजे के बीच कोई दवा का छिड़काव न करें। यदि दवा का छिड़काव करना है तो शाम को करें। फल सड़न, पौध सड़न व जड़ गलन आदि के बचाव के लिए 2 ग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड प्रति लीटर पानी में मिलाकर शाम को छिड़काव करें। जल में घुलनशील पोषक तत्वों का सिंचाई के पानी के साथ शाम के समय उपयोग करें।